सतरहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा ! उज्जैन(१) नगरी का महासैन(२) नाम राजा था. और वहां का बासी देवशर्मा ब्राह्मण. जिस के बेटे का नाम गुणाकर. वह बड़ा ज्वारी ऊआ ; यहां तलक, कि जो कुछ उस ब्राह्मण का धन था सो जूए में हार दिया. तब सारे कुनबे के लोगों ने गुणाकर को घर से निकाल दिया. और उस से कुछ बन न आया. लाचार होकर, वहां से चला तो कितने दिनों में एक शहर में आया. वहां देखता क्या है कि एक योगी धूनी लगाये ऊए बैठा है. उसे दंडवत कर, यह भी वहां बैठ गया. योगी ने इस से पूछा तू कुछ खायगा? इस ने कहा महाराज! दोगे तो क्यों न खाऊंगा. योगी ने एक आदमी की खोपरी में खाना भरके इसे ला दिया. इस ने देखकर कहा इस कपाल का अन्न मैं न खाऊंगा.

जब इन्ने भोजन न किया, तब योगी ने ऐसा मंत्र पढ़ा कि एक यक्षनी हाथ जोड़ आनके हाज़िर ऊई ; और बोली महाराज ! जो आज्ञा हो सो करूं. योगी ने कहा इस ब्राह्मण को इच्छाभोजन दे. इतना सुनके, उस ने एक अच्छा सा मंदिर बना, उस में सब सुख के सामान रखके, इसे यहां से अपने साथ ले गई. और एक चौकी

(१) उज्जयिनी. (२) महासेन.

पर बैठा, भांति भांति के बिंजन और पकवान थाल भर भर, उस के रूबरू रक्खे. उस ने मन मानता जो भाया सो खाया. और इस के बअ्द पानदान उस के सन्मुख रख दिया. और केसर चंदन गुलाब में घिसकर उसके बदन में लगाया. फिर अच्छे बस्त्र सुगंधों से बासकर पहना, फूलों की माला गले में डाल, वहां से पलंग पर ला बिठाया. कि इतने में सांझ ऊई. और यह भी अपनी तैयारी कर सेज पर जा बैठी. और उस ब्राह्मण ने सारी रैन सुख चैन से काटी.

जब भोर ऊई, वह यक्षनी अपने स्थान पर गई. और इस ने योगी के पास आनकर कहा कि स्वामी! वह तो चली गई. अब मैं क्या करूं. योगी बोला वह बिद्या के बल से आई थी. और जिसे बिद्या आती है उस के पास रहती है. इसने कहा महाराज ! यह बिद्या मुझे दो तो मैं साधूं. तब योगी ने एक मंत्र उसको दिया ; और कहा कि इस मंत्र को चालीस दिन, आधी रात के समैं जल में बैठ, एक चित होके साध. इसी तरह से यह साधने को जाया करता ; और अनेक अनेक तरह के भय नज़र आते. पर यह किसू से न डरता. जब कि वह मुद्दत हो चुकी, तो इसने योगी से आकर कहा कि महाराज ! जितने दिन आप ने कहे थे मैं साध आया. उस ने कहा कि इतने दिन अब आग में बैठकर साध. इस ने कहा महाराज! एक बेर अपने कुटुंब से मिल आऊं फिर आके साधूंगा.

यह योगी से कह बिदा हो अपने घर को गया. और कुनबे के लोगों ने इसे जो देखा तो गले लगा लगा रोने लगे. और इस के बाप ने कहा ऐ गुणाकर! इतने दिनों तू कहां था; और किस वास्ते घर को बिसारा. ऐ पुत्र! ऐसे कहा है जो पतिव्रता स्त्री को छोड़के जुदा रहता है, और जवान नारी को पीठ देता है; या जो जिसे चाहता है वह उसे नहीं चाहता वह चंडाल के समान होता है. और ऐसे कहा है, गृहस्थीधर्म बराबर कोई धर्म नहीं; और घरवाली की बराबर कोई संसार में सुख देनेवाली नहीं. और जो माता पिता की निंदा करते हैं, सो अधम नर हैं; और उनकी गति मुकति कभी नहीं होती; ऐसा ब्रह्मा ने कहा है.

तब गुणाकर बोला कि यह शरीर रकत और मासका बना हुआ है; सो कीड़ोंकी खान है. और सुभाव इसका यह है, कि एक रोज़ इसकी खबर न लीजे तो दुर्गंध आती है. जो ऐसे शरीर से प्रीति करते हैं, सो मूरख हैं. और जो इससे हित नहीं करते, वे पंडित हैं. और इस शरीर का यही धर्म है कि बार बार जनम लेता है और मिटता है. ऐसे शरीर का क्या भरोसा कीजे. इसे बहुतेरा पवित्र कीजे, पर यह पवित्र नहीं होता. जैसे मलका भरा घड़ा, ऊपर के धोने से, पाक नहीं होता; और कोयले को कोई बहुतेरा धोवे पर वह धौला नहीं होता. और जिस शरीर में मल के सोत सदा बहा करें, वह किस तरह से शुद्ध हो. इतना कह फिर बोला कि किस की मा, किस

का बाप, किस की जोरू, किस का भाई. इस संसार की यही रीत है कि कितने आते हैं और कितने जाते हैं. जो यज्ञ और होम के करनेवाले हैं, सो अग्नि को ईश्वर जानते हैं. और जो कम अक़ल हैं सो प्रतिमा कर भगवान को मानते हैं. और योगी लोग अपने घट में ही हरि जानते हैं. ऐसे गृहस्थी धर्म को मैं न करूंगा; बल्कि योगाभ्यास करूंगा.

इतना कह, उसने, घर से बिदा ले, योगी के पास आ, अग्नि में बैठ मंत्र साधा. पर यक्षनी न आई. तब योगी के पास गया. और योगी ने उस से कहा कि विद्या तुझे न आई? फिर इसने कहा हां महाराज! न आई.

इतना किस्सः कह, बैताल बोला कि ऐ राजा! कहो, किस कारन उसे विद्या न आई? राजा बोला कि वह साधक दुचिता हुआ, इस लिये न आई. और ऐसे कहा है कि एकचित होने से मंत्र सिद्ध होता है; और दुचित होने से नहीं होता. और ऐसे भी कहा है कि जो दान के हीन हैं तिन की कीर्ति नहीं होती; और जो सत से हीन है उन्हें लाज नहीं; जो न्याव से हीन हैं तिन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती; और जो ध्यान के हीन हैं उन्हें भगवान नहीं मिलता.

यह सुन बैताल ने कहा कि जो साधक मंत्र सिद्ध करने के लिये आग में बैठा वह किस तरह दुचिता हुआ? राजा ने कहा, कि मंत्र साधने की बिरियां, जब वह अपने कुटुंब से मिलने गया उस समैं योगी ने क्रोध कर अपने मन में कहा

कि ऐसे दुर्दिले साधक को मैं ने विद्या क्यों सिखाई. इस लिये उसे विद्या न आई. और ऐसे कहा है कि मनुष कितनाही पराक्रम करे, पर कर्म उस के साथ रहता है; और कितनाही काम अपनी बुद्धि से करे, पर कर्म का लिखाही मिलता है. यह सुनकर, बैताल फिर उसी दरखत पर जा लटका. और राजा भी, उसके पीछेही जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

अठारहवीं कहानी.

बैताल बोला कि ऐ राजा! कुबलपुर(१) नाम एक नगर. वहां के राजा का नाम सुदत्ती.(२) और उस नगर में धनाढ्यी(३) नाम एक सेठ भी रहता था. उस की पुत्री का नाम धनवती था. छोटी उमर में उसकी शादी एक गौरीदत्त नाम बनिये से कर दी. कितने दिनों के पीछे एक लड़की उस के हुई. नाम उस का मोहनी(४) रक्खा. जब वह कई एक बरस की हुई, तब उस का बाप मर गया. और उस बनिये के भाई बंदों ने उस का सरबस खोस लिया. वह लाचार हो, अपनी बेटी का हाथ पकड़, अंधेरी रात के समैं, उस घर से निकल, अपने मा बाप के घर को चली.

(१)कुवलयपुर. (२)सुदत्त. (३)धनाढ्य. (४)मोहिनी.

थोडी एक दूर जाकर, राह भूल एक मरघट में जा निकली. वहां एक चोर सूली पर टंगा हुआ था, अचानक इस का हाथ उस के पांव में लगा. वह बोला कि इस समैं मुझे किस्ने दुख दिया. तब यह बोली मैं ने जानकर तुझे दुख नहीं दिया. मेरी तक़सीर मुआफ़ कर. उस ने कहा दुख और सुख कोई किसू को नहीं देता. जैसा बिधाता कर्म में लिख देता है, वैसाही भुगतता है. और जो मनुष कहते हैं यह काम हम ने किया, सो निपट निरबुद्धी हैं. क्योंकि मनुष करम के तागे में बंधे हुए हैं. वह जहां जहां चाहता है, तहां तहां खैंच ले जाता है. बिधाता की बात कुछ समझी नहीं जाती. क्योंकि, मनुष अपने मन में कुछ बिचारते हैं; और वह कुछ और कर देता है.

यह सुन धनवती बोली ऐ पुरुष! तू कौन है? उस ने कहा मैं चोर हूं. तीसरा दिन सूली पर मुझ को हुआ है; और जान नहीं निकलती. यह बोली किस कारन. उस ने कहा कि बिन ब्याहा हूँ. अगर तू अपनी कन्या मुझे ब्याह दे, तो करोड़ अशरफ़ी दूं. मशहूर है कि पाप का मूल लोभ; और ब्याध का मूल रस; और दुख का मूल नेह. जो इन तीनों को छोड़े, सो सुख से रहे. पर ये हर किसू से छूट नहीं सकते. अंतकाल लालच के मारे, धनवती ने कन्या देने की इच्छा की. और पूछा मैं यह चाहती हूं, कि तेरे पुत्र हो. पर किस तरह से होगा. उसने कहा कि यह जिस समैं जवान होगी, उस ऐयाम में